सीखते रहने से पिछड़ापन दूर होता है : निश्चितानंदा

जागरण संवाददाता, रांची: इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केंद्र, क्षेत्रीय केंद्र, रांची और रामकृष्ण आश्रम दिव्यायन कृषि विज्ञान केंद्र, गेतलसूद द्वारा अनगड़ा में 13 से 17 अक्टूबर 2025 तक 'सोहराई और कोहबर' पारंपरिक चित्रकला पर पांच दिवसीय कार्यशाला का आयोजन किया गया। इसका मुख्य उद्देश्य विद्यार्थियों को हजारीबाग क्षेत्र की आदिवासी महिलाओं द्वारा सदियों से संरक्षित चित्रकला शैलियों की तकनीकों और सौंदर्यशास्त्र से परिचित कराना है।

कार्यशाला में हजारीबाग की मालो देवी और संगीता देवी 40 छात्र-छात्राओं को प्रशिक्षण दे रही हैं। वे चित्रांकन की विधियों के साथ-साथ इन कलाओं में निहित प्रतीकों, लोक कथाओं और आध्यात्मिक अर्थों को भी साझा कर रही हैं। कार्यशाला का उद्घाटन स्वामी निश्चितानंदा महाराज, डा. कुमार संजय झा, स्वामी भक्तिशानंद, डा. कमल बोस, घनश्याम उरांव, अनंत चौधरी, बोलो कुमारी उरांव और प्रभात लिंडा की उपस्थिति में हुआ। डा. कुमार संजय झा ने कार्यशाला के उद्देश्य के बारे में जानकारी दी और बताया कि पिछले कुछ कार्यशालाओं में इस कला से जुड़े कलाकारों को राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मु द्वारा सम्मानित किया गया है।

अनगड़ा में 'सोहराई और कोहबर' पर पांच दिवसीय चित्रकला कार्यशाला के शुभारंभ के मौके पर उपस्थित लोग ● जागरण

- अनगड़ा में 'सोहराई और कोहबर' पर कार्यशाला प्रारंभ
- नई शिक्षा नीति के अनुरूप पारंपरिक ज्ञान को भी आगे लेकर जाना है: डा. कुमार

उन्होंने पारंपरिक लोककलाओं की स्थिति पर विचार करते हुए कहा कि ये कलाएं हमारे पूर्वजों से चली आ रही हैं और आज भी अपनी पहचान बनाए हुए हैं। वर्तमान में नई शिक्षा नीति (एनईपी) 2020 के अनुरूप पारंपरिक ज्ञान को आगे बढ़ाना आवश्यक है। स्वामी निश्चितानंदा महाराज ने विद्यार्थियों को प्रोत्साहित करते हुए कहा कि सीखते रहने से समाज में पिछड़ापन दूर होता है। कार्यक्रम में उपस्थित डा. कमल बोस ने विद्यार्थियों को शुभकामनाएं देते हुए कहा कि रंग में उमंग और जोश है, जो जीवन को सुंदर बनाता है। छात्र इन पारंपरिक शैलियों का व्यावहारिक अनुभव प्राप्त कर रहे हैं, जिसमें वे मिट्टी की दीवारों पर प्राकृतिक रंगों से कलाकृतियां बनाने की विधि सीख रहे हैं।